लेख

गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा और पेडागॉजिकल लीडरशिप

पुष्पेन्द्र यादव*

भारत उन देशों की कतार में शामिल है जिन्हें वर्ष 2030 तक संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित एजेंडा 2030 के 17 सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना है। इन लक्ष्यों में सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हो (लक्ष्य 4), इसे प्रमुखता से जगह दी गयी है। एक बेहतर और टिकाऊ भविष्य प्राप्त करने के लिए इन लक्ष्यों को समय से प्राप्त करना बेहद ज़रूरी है। भारत में 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ़्त एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का मसौदा *शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009* के रूप में अप्रैल 2010 से प्रभाव में आया है, इससे भारत जैसे भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता वाले देश में बच्चों के लिए मुफ़्त प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना संभव तो हुआ है लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता क्या हो इस पर अभी भी बड़ा प्रश्नचिह्न है। *नेशनल अचीवमेंट सर्वे (2017)* और *असर (2018)* की रिपोर्ट स्पष्ट रूप से हमें हमारी प्राथमिक शिक्षा प्रणाली की चिंताजनक स्थिति दिखाती है। भारत में गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास जारी है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने इस मुद्दे की गंभीरता को समझते हुए कहा है कि हमें प्राथमिक शिक्षा की संरचना, पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में बदलाव लाना चाहिए। पेडागॉजिकल लीडरशिप का संप्रत्यय परंपरागत रूप से चली आ रही स्कूल लीडरशिप से भिन्न है। पेडागॉजिकल लीडरशिप शिक्षण और सीखने के समर्थन करने के बारे में है। इस लेख में पेडागॉजिकल लीडरशिप से संबंधित शोधों का गंभीरता से अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्ता ने यह समझाने की कोशिश की है कि स्कूल की व्यवस्था (सेटिंग) में पेडागॉजिकल लीडरशिप का क्या अर्थ है? और कैसे पेडागॉजिकल लीडर गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने में सहायक होते हैं।

गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा

गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य एक ऐसी शिक्षा प्रदान करने से है जो हर विद्यार्थी के काम आए और इसके साथ ही हर विद्यार्थी की क्षमताओं के संपूर्ण विकास में सामान रूप से उपयोगी हो। शिक्षा ऐसी हो जो हर विद्यार्थी की वैयक्तिक भिन्नताओं का ध्यान रखने वाली हो। हमें पता है कि हर बच्चे का सीखने का तरीका अलग-अलग होता है, ऐसे में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हर विद्यार्थी के सीखने के तरीके को अपने अंदर समाहित करने वाली होनी चाहिए ताकि

**पीएच.डी. शोधार्थी*, शिक्षा विभाग (केंद्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, 33, छात्र मार्ग, दिल्ली 110 007

© NCERT not to be republished

कोई भी विद्यार्थी सीखने के पर्याप्त मौकों से वंचित न रह जाए (सिंह, वी. 2016)। शिक्षा ऐसी हो जिसमें चीज़ों को समझने और अर्थ निर्माण पर विशेष बल दिया जाए और विद्यार्थियों को चर्चाओं के माध्यम से अपनी बात कहने और नवीन ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इस नज़रिए से संचालित होने वाली समस्त कक्षाओं में गतिविधियों को संचारित करने पर विशेष ध्यान दिया जाए। ऐसे में शिक्षकों को ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी, समूह और क्रियाकलापों के माध्यम से तो सीखें ही, साथ ही साथ उन्हें खुद के प्रायस द्वारा सीखने के भी पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए ताकि विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ सके और उनके भीतर सीखने को लेकर सकारात्मक विश्वास पैदा हो सके।

गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा में पेडागॉजी की भूमिका

प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में पेडागॉजी की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। प्राथमिक स्तर पर पेडागॉजी की भूमिका को समझने से पहले हमें यह समझना होगा कि पेडागॉजी क्या है? हम जानते हैं कि पेडागॉजी पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया है, पेडागॉजी इस बात की समझ है कि अधिगम कैसे होता है? यह एक अभ्यास (प्रैक्टिस) है, ये पता करने के लिए कि सीखने की प्रक्रिया किस तरह घटित होती है (एलीना, फोंसेन, 2019)। अनिवार्य रूप से यह शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन है। पेडागॉजी एक विधि है जिससे ये पता चलता है शिक्षण की प्रक्रिया में अधिगम हो रहा है कि नहीं। विश्वभर में आज पेडागॉजी से संबंधित नवाचारों पर ढेर सारे शोध किए जा रहे हैं ताकि ये पता किया जा सके कि अधिगम की प्रक्रिया को और प्रभावी कैसे बनाया जाए? जिससे विद्यार्थी अर्थपूर्ण तरीके से नए ज्ञान को सीखें और प्रक्रिया का आनंद भी लें।

प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी मानव विकास के कुछ बहुत अहम पड़ावों से होकर गुजरते हैं, ऐसे में उनके भीतर शारीरिक, संवेगात्मक एवं संज्ञानात्मक स्तर पर कई सारे त्वरित परिवर्तन होते हैं। इसलिए प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कार्य करने के लिए शिक्षकों के भीतर पेडागॉजी की समझ (शिक्षण कार्य से अधिगम हो रहा है कि नहीं) एवं विद्यार्थियों की पेडागॉजिकल ज़रूरतों (सीखने का अच्छा वातावरण, विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण विधियाँ, सुरक्षा की भावना, शिक्षण में विचार-विमर्श और गतिविधियों का समावेशन इत्यादि) का ज्ञान होना आवश्यक है ताकि वे अपनी शिक्षण योजनाओं को विद्यार्थियों की ज़रूरतों और वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रख कर बना पाएँ। प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए हमें ऐसे कुशल प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है जो पेडागॉजिकल कौशलों (विषय का ज्ञान, मानव विकास की समझ, नवीन व्यवहार सीखना, अच्छा संप्रेषण कौशल इत्यादि) से लैस हों ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी ज़रूरत और अपेक्षित शैली में शिक्षा प्रदान की जा सके।

पेडागॉजिकल लीडरशिप का संप्रत्यय

पेडागॉजिकल लीडरशिप का संप्रत्यय विद्यालयों में परंपरागत रूप से चली आ रही लीडरशिप से काफ़ी

© NCERT not to be republished

अलग है। आमतौर पर हम किसी विद्यालय के प्रमुख (हेड) को लीडर के रूप में देखते हैं जो विद्यालय में होने वाली समस्त गतिविधियों और शैक्षिक कार्यक्रमों की निगरानी करते हैं और इसके लिए आवश्यक दिशा-निर्देश शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए जारी करते हैं। लीडरशिप के इस रूप में स्पष्ट देखा जा सकता है कि विद्यालय के भीतर अधिकतम निर्णय लेने की शक्ति प्रधानाचार्य और हेडमास्टर के पास होती है। शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी इनके आदेशों का पालन करते हुए देखे जाते हैं। इस प्रकार की लीडरशिप में लीडर आगे चलता है और टीम के बाकी लोग उसका अनुसरण करते हैं। परंपरागत लीडरशिप के इस रूप में अथॉरिटी को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है।

पेडागॉजिकल लीडरशिप का मूल भाव स्कूलों में चली आ रही परंपरागत लीडरशिप (अथॉरिटी युक्त) के बिल्कुल विपरीत है। विद्यालय के भीतर या बाहर कोई भी व्यक्ति जो अपनी वाणी से, क्रियाकलापों से एवं अन्य गतिविधियों द्वारा यदि पेडागॉजिकल क्रियाओं (विषय का ज्ञान, मानव विकास की समझ, नवीन व्यवहार सीखना, अच्छा संप्रेषण कौशल, खोजी प्रवृत्ति का विकास इत्यादि) को प्रोत्साहित करता है तो वह पेडागॉजिकल लीडर हो सकता है। इस तरह की लीडरशिप में अच्छे संबंध निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है क्योंकि जब प्रधानाचार्य, शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच अच्छे और मज़बूत संबंध होंगे तभी वे विद्यालय के भीतर शिक्षण और अधिगम को सशक्त करने वाली पेडागॉजिकल क्रियाओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और इन क्रियायों का पूरी तन्मयता से आनंद उठा पाएँगे।

विद्यार्थी, शिक्षक या प्रधानाचार्य ये सभी पेडागॉजिकल लीडर हो सकते हैं— इसके लिए उनके भीतर तत्परता और लीडरशिप की समझ उपस्थित होनी चाहिए। एक पेडागॉजिकल लीडर विद्यार्थियों और शिक्षकों को एक ऐसा वातावरण प्रदान करने की कोशिश करता है जिसमें वे शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया में सर्वोत्तम योगदान दे पाएँ और इस प्रक्रिया का आनंद भी ले पाएँ। वो स्वयं को लीड करें न कि किसी का अनुसरण करें। पेडागॉजिकल लीडरशिप इस बारे में है कि विद्यालय परिसर में शिक्षण और अधिगम के समस्त स्तरों को और बेहतर तरीके से कैसे संचालित किया जाए? एक पेडागॉजिकल लीडर बनने के लिए विषय का ज्ञान होने के साथ-साथ व्यक्तियों से सकारात्मक संबंध

पेडागॉजिकल लीडरशिप	विद्यालय के भीतर या बहार कोई भी व्यक्ति जो अपनी वाणी से, क्रियाकलापों से एवं अन्य गतिविधियों द्वारा यदि पेडागॉजिकल क्रियाओं (विषय का ज्ञान, मानव विकास की समझ, नवीन व्यवहार सीखना, अच्छा संप्रेषण कौशल, खोजी प्रवृत्ति इत्यादि) को प्रोत्साहित करता है तो वह पेडागॉजिकल लीडर हो सकता है।

चित्र 1— पेडागॉजिकल लीडरशिप

© NCERT not to be republished

बनाने, अभिनवीकरण (इनोवेशन) और नवीन तरीकों को सीखने, स्व-प्रतिबिम्बन (सेल्फ-रिलेक्शन) करने, लक्ष्य बनाने और अनुशासन को व्यवहार में ढालने पर ज़ोर दिया जाता है।

पेडागॉजिकल लीडरशिप से संबंधित साहित्य की समीक्षा

फोंसेन, एलिना और सौकेनन, उल्ला (2020) ने एक अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य यह जाँचना था कि अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन (ई.सी.ई.) के पेशेवर शिक्षक/शिक्षिकाएँ लीडरशिप का मूल्यांकन कैसे करते हैं? प्रतिभागियों के रूप में 110 ई.सी.ई. पेशेवर, विशेषज्ञ, निदेशक और शिक्षक थे और विभिन्न लीडरशिप डिज़ाइनों के छह प्रकार, शोध के लिए चुने गए थे। इस अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि प्रतिभागी पेडागॉजिकल लीडरशिप पर अधिक गंभीर रूप से प्रतिबिंबित (रिलेक्ट) करते हैं और वे पेडागॉजिकल लीडरशिप की गुणवत्ता के बारे में अधिक माँग वाला रवैया प्रदर्शित करते हैं। एटकिंसन (2017) ने पेडागॉजिकल लीडरशिप पर एक अध्ययन किया और अपने शोध में शोधकर्ता ने अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन (ई.सी.ई.) के क्षेत्र में पेडागॉजिकल लीडरशिप के बारे में अपने अनुभवों को फिर से परिभाषित किया था। शोधकर्ता ने इस शोध में शैक्षणिक वर्णन को महत्वपूर्ण संवाद उत्पन्न करने के लिए एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया था। इस अध्ययन के परिणाम पेडागॉजिकल लीडरशिप के प्रति शिक्षकों के सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं एवं अच्छे संबंध बनाने और सांस्कृतिक संवादों को प्रोत्साहित करने पर ज़ोर देते हैं। वेब, आर. (2005) ने अपने शोधकार्य के परिणामों के माध्यम से निष्कर्ष निकाला है कि विद्यालयी शिक्षा से जुड़े अधिकांश लोग पेडागॉजिकल लीडरशिप के महत्व को नहीं जानते हैं। इसलिए विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रयास के बाद भी हमें बेहतर परिणाम नहीं मिले हैं। लुबना अलमीन और अन्य (2015) ने अपने शोधकार्य में समझाया है कि लोगों के मन में एक गलत आम धारणा है कि पेडागॉजिकल लीडर कौन है? आम लोग सोचते हैं कि प्रधानाचार्य, हेडमास्टर, निदेशक या कोई उच्च श्रेणी का पद ग्रहण करने वाला व्यक्ति ही लीडर हो सकता है लेकिन यह धारणा पूरी तरह सच नहीं है। शोधकर्ता ने अपने शोध में बताया कि एक सामान्य व्यक्ति भी लीडर हो सकता है। एक विद्यार्थी लीडर हो सकता है, एक शिक्षक लीडर हो सकता है और कोई भी व्यक्ति जिसमें लीडरशिप की समझ है, वह लीडर हो सकता है। पोंडी (1978) ने एक सवाल उठाया कि स्कूल की व्यवस्था (सेटिंग) में पेडागॉजिकल लीडरशिप का क्षेत्र क्या है? उनके अनुसार, किसी को प्रभावित करना या किसी समूह को सामने से लीड करना या उस पर हावी होना शैक्षिक सेटिंग में एक वास्तविक लीडर की निशानी नहीं है। पोंडी (1978) बताते हैं कि पेडागॉजिकल लीडर दूसरों के लिए सार्थक गतिविधियों द्वारा सीखने के वातावरण को और सशक्त बनाने का कार्य करता है। वो विद्यार्थियों को एक प्रकार का आत्मविश्वास प्रदान करता है जिससे वे एक कदम आगे आकर चीज़ों को अपनी समझ के अनुसार देखें और उनके अर्थ को भी समझें।

शोधकर्ता का आलोचनात्मक दृष्टिकोण

शोधकर्ता ने लीडरशिप और पेडागॉजिकल लीडरशिप पर आधारित विभिन्न प्रकार के शोधों का अध्ययन करने के पश्चात् भारत में स्कूल लीडरशिप के संदर्भ में अपना आलोचनात्मक दृष्टिकोण निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से रखने का प्रयास किया है—

- जिन देशों में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली वास्तव में अच्छी तरह से काम करती है, जैसे— यू.एस.ए., यू.के., कनाडा, फिनलैंड इत्यादि। इन देशों ने स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पेडागॉजिकल लीडरशिप को एक अभिन्न अंग के रूप में सम्मिलित किया है, ऐसी स्थिति भारत के संदर्भ में अभी तक देखने को नहीं मिलती।
- भारत में शिक्षा से जुड़े ऐसे व्यक्तियों की संख्या काफ़ी ज़्यादा है जो अभी भी पेडागॉजिकल लीडरशिप का मतलब नहीं समझते और न ही वे परंपरागत रूप से चली आ रही लीडरशिप और पेडागॉजिकल लीडरशिप में भेद कर पाते हैं।
- स्कूल लीडरशिप को लेकर भारत में पिछले कुछ वर्षों में धारणा बदली है। राज्य और केंद्र सरकारों ने भी स्कूल लीडरशिप को लेकर विभिन्न प्रोग्राम शुरू किए हैं लेकिन आम लोगों में जितनी जागरूकता और संवेदनशीलता स्कूलों के चुनाव, पढ़ाने वाले शिक्षकों की अहर्ता, पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को लेकर दिखती है, उतनी अभी स्कूल लीडरशिप को लेकर नहीं दिखती।
- शोध बताते हैं कि भारत में लीडरशिप की समझ को लेकर लोगों में कई प्रकार के पूर्वाग्रह और भ्रांतियाँ भी विद्यमान हैं कई बार लोग अपने व्यवहार से किसी को प्रभावित करना, किसी समूह को लीड करना या रौबदार व्यक्तित्व होने को भी लीडरशिप के प्रमुख लक्षण मान लेते हैं।
- विभिन्न प्रकार के दस्तावेज़, जैसे— *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986*, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005* में स्कूल लीडरशिप में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए काफ़ी सारे सुझाव दिए गए थे लेकिन आज भी ज़मीनी स्तर पर इन सुझावों का अनुपालन होता नहीं दिखता।
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने इस बार स्कूल लीडरशिप में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं और ज़मीनी स्तर पर भी हमें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा स्कूल हेड्स और शिक्षकों के लिए कई चरणों में ट्रेनिंग प्रोग्राम चलते दिख रहे हैं। हम उम्मीद कर सकते हैं निकट भविष्य में हमें स्कूल लीडरशिप के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव होते दिखेंगे।

स्कूल लीडरशिप में नीपा की भूमिका

स्कूल लीडर्स को पेडागॉजिकल लीडर के रूप में देखना, ये अपेक्षाकृत नया संप्रत्यय है जो 1980 के दशक के प्रारंभ में अस्तित्व में आया। भारत में, पिछले एक दशक से, हमने अलग-अलग तरीकों से स्कूल लीडरशिप पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। भारत के स्कूलों में लीडरशिप से संबंधित ज़रूरतों को पूरा करने में नीपा (एन.आई.ई.पी.ए.) का अब तक बड़ा योगदान रहा है। वर्ष 2012 में नीपा ने नेशनल सेंटर फ़ॉर स्कूल लीडरशिप (एन.सी.एस.एल.) की स्थापना के साथ

© NCERT not to be republished

स्कूल लीडरशिप पर काम शुरू किया और 2014 में उन्होंने स्कूल लीडरशिप के लिए नेशनल प्रोग्राम डिजाइन एंड करिकुलम फ्रेमवर्क (एन.पी.डी.सी.एफ़.) विकसित किया। इस दस्तावेज़ में, यह बताया गया है कि पेडागॉजिकल लीडर एक संस्थान में कैसे काम करता है? और कैसे पेडागॉजिकल लीडर स्कूलों में एक ऐसा माहौल तैयार करते हैं जिसमें विद्यार्थी खुशी से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते हैं। भारत के स्कूलों में सकारात्मक बदलाव हों और वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अग्रसर हो सकें, इसी लक्ष्य को सामने रख कर नीपा वर्तमान में नेशनल सेंटर फ़ॉर स्कूल लीडरशिप (एन.सी.एस.एल.) के माध्यम से प्रधानाचार्यों, शिक्षकों को ट्रेनिंग देने के लिए देश के 36 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के 741 ज़िलों से जुड़कर कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कक्षा तीन तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ़.एल.एन.) विकसित करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कहा गया है कि यह नीति विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप में तभी जुड़ सकेगी जब बच्चों को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की प्राप्ति हो सकेगी। विद्या प्रवेश, तीन महीने का एक तत्परता कार्यक्रम है जो कक्षा एक के बच्चों के लिए है, यह कार्यक्रम कक्षा एक के शुरुआत में लागू किया जाना है। इन कार्यक्रमों को लागू करने में पेडागॉजिकल लीडरशिप की अहम भूमिका होगी।

पेडागॉजिकल लीडरशिप के प्रमुख तत्व

पेडागॉजिकल लीडरशिप के भीतर समाहित होने वाले तत्व निम्नलिखित हैं—

- छात्रों की ज़रूरतों और रुचियों का पता लगाना
- छात्रों के सीखने पर ध्यान देना
- विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन/दुनिया से लिए गए उदाहरणों से जोड़ना
- एक पेशे के रूप में शिक्षण पर भविष्यवाणी करना
- स्कूल परिसर में विभिन्न प्रकार की लीडरशिप को वितरित करना
- पेशेवर शिक्षण समुदाय विकसित करने के बारे में जानकारी देना
- शिक्षक पेशेवर शिक्षा के लीडर के रूप में प्रधानाचार्य को देखना
- नैतिक और प्राकृतिक मूल्यों का विकास
- परीक्षा के परिणाम सीखने के एक पहलू के रूप में देखना एवं विद्यार्थियों द्वारा सीखे गए नए संप्रत्ययों व अवधारणाओं की समझ के स्तर के बारे में जानकारी जुटाना।

पेडागॉजिकल लीडरशिप का महत्व

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने में पेडागॉजिकल लीडशिप के महत्व को इस बात से समझा जा सकता है कि पेडागॉजिकल लीडर विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों से अच्छे मज़बूत संबंध बनाने के साथ-साथ नवीन शिक्षण विधियों के प्रति जिज्ञासा को बढ़ावा देने, शिक्षण कार्य में नवाचार (इनोवेशन) करने, तर्कसंगत रूप से सोचने और विचारों के बीच सार्थक संबंध खोजने के अवसर प्रदान करता है। वह विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों को सुरक्षा की भावना प्रदान करता है, और स्कूल परिसर के अंदर आनंदपूर्ण तरीके से सीखने का माहौल बनाता

© NCERT not to be republished

है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वर्तमान परिदृश्य में स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में पेडागॉजिकल लीडरशिप की महत्वपूर्ण भूमिका (रोल) है।

पेडागॉजिकल लीडर के कार्य

पेडागॉजिकल लीडर के रूप में प्रधानाचार्य, शिक्षक एवं कर्मचारी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए जिन दायित्वों का निर्वहन करते हैं, उन्हें नीचे बिंदुवार तरीके से लिखा गया है—

- स्कूल में प्रयोग किए जाने वाले शिक्षण और अधिगम के तरीकों को मज़बूत करने का प्रयास करते हैं एवं स्कूलों के सुधार के लिए एक उपकरण के रूप में भी काम करते हैं।
- सीखना आपसी समझ के साथ होता है और इस दिशा में वे ऐसे काम करने की कोशिश करते हैं जहाँ सीखना, कक्षा और पाठ्यपुस्तक से परे हो या बाहर निकल कर हो। पेडागॉजिकल लीडर विद्यार्थियों को सही तरीके से प्रेरित करने की कोशिश करते हैं ताकि वे स्कूल के अंदर सीखने का आनंद ले सकें।
- वे पेडागॉजिकल योजना विकसित करते हैं और इस दिशा में अन्य स्कूलों को भी प्रेरित करते हैं। वह शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों के स्व-मूल्यांकन के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं।
- वे बच्चों के मन के अंदर जिज्ञासा और खुले विचारों का विकास करते हैं, उनका प्रयास रहता है कि कक्षा के भीतर प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचा जाए, और ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जिसमें विद्यार्थी सीखने के लिए लालायित रहें।
- वे स्कूल के शिक्षकों के बीच समन्वय स्थापित करते हैं और स्कूल परिसर के अंदर शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का पर्यवेक्षण भी करते हैं।
- वे शिक्षकों और स्टाफ़ सदस्यों के साथ समय-समय पर बैठकों की व्यवस्था करके शैक्षणिक काम की प्रगति की समीक्षा करते हैं और विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करते हैं। वे शैक्षणिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का कैलेंडर पहले से तैयार करने की योजना बनाते हैं।
- वे शिक्षकों को कार्य करने के लिए एक अच्छा वातावरण प्रदान करने का प्रयास करते हैं और उन्हें इस प्रकार की शिक्षण विधियों का उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं जो बाल-केंद्रित हों, साथ ही नवीनता से युक्त हों।
- वे उन छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं या उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करते हैं जो समाज के आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग या हाशिए के समूहों से संबंधित हैं।
- स्कूलों में हॉउस प्रणाली या कोई अन्य संभावित प्रणाली तैयार करके कई प्रकार की सह-पाठ्यचर्या और समग्र (होलिस्टिक) गतिविधियों को शुरू करते हैं ताकि विद्यार्थी इन गतिविधियों में भाग लें और खुले दिमाग का विकास कर सकें।
- विद्यार्थियों के लिखित कार्य और गृह-असाइनमेंट का समय पर आकलन करते हैं और उन्हें समय पर आवश्यक फीडबैक प्रदान करते हैं ताकि छात्र अपने सीखने में आवश्यक सुधार कर सकें।
- स्कूल परिसर के अंदर पुस्तकालय सुविधाओं की व्यवस्था और विकास करना सुनिश्चित करते

© NCERT not to be republished

हैं। साथ ही इस बात की चिंता भी करते हैं कि विद्यार्थी और शिक्षक पुस्तकालय संसाधनों तक आसानी से पहुँच सकें और वे अपने पेशेवर और शैक्षणिक विकास के लिए पुस्तकों, पत्रिकाओं इत्यादि सामग्री का उपयोग कर सकें।

- समय-समय पर स्कूल परिसर के अंदर माता-पिता और शिक्षकों की बैठक की व्यवस्था करते हैं और प्रत्येक विद्यार्थी की प्रोग्रेस रिपोर्ट की चर्चा, उनके माता-पिता के साथ व्यक्तिगत रूप से करते हैं ताकि शिक्षकों और संरक्षकों के बीच के संबंध को मज़बूत किया जा सके।
- पेडागॉजिकल लीडर्स विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं। साथ ही स्कूल परिसरों के अंदर स्वच्छता के उच्च मानकों को सुनिश्चित करके, अच्छी स्वास्थ्य आदतों को अपनाने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं। समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए स्कूल परिसर के अंदर चिकित्सा परीक्षणों की व्यवस्था भी करते हैं।
- वे शिक्षकों का एक पूल तैयार करते हैं एवं बोर्ड परीक्षाओं के दौरान उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए जाने वाले शिक्षकों के स्थान पर काम करने के लिए इन शिक्षकों को नियुक्त करते हैं ताकि शिक्षण और अधिगम का कार्य निर्बाध रूप से जारी रहे।
- वे स्वयं भी अनुशासन में रहते हैं और विधार्थियों को भी स्व-अनुशासन के लिए प्रेरित करते हैं।

इन सभी कार्यों को स्कूलों के अंदर पेडागॉजिकल लीडर द्वारा किया जाता है या किए जाने की उम्मीद की जाती है ताकि ये सुनिश्चित हो पाए कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमता के साथ सीखें और हर संभव तरीके से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करें।

पेडागॉजिकल लीडरशिप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में कैसे सहायक है?

पेडागॉजिकल लीडर पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में सुधार के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। हमें पता है विद्यालय समाज का एक छोटा प्रतिरूप होता है। विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी समाज के बेहतर नागरिक बनें। उनके व्यवहार में, जीवन कौशल में सकारात्मक बदलाव आएँ, इसके लिए ज़रूरी है कि वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करें। ऐसे में विद्यालयों में अकादमिक लीडर के रूप में शिक्षकों और प्रधानाचार्यों की भूमिका बेहद अहम हो जाती है। इसलिए आवश्यक है कि विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए वहाँ के शिक्षक और प्रधानाचार्य पेडागॉजिकल लीडर की तरह कार्य करें। विद्यालय के स्तर पर पेडागॉजिकल लीडरशिप और गुणात्मक शिक्षा को ध्यान में रख कर कई शोध हुए हैं। शोधकर्ता ने उनमें से कुछ प्रमुख शोधों के परिणामों का ज़िक्र यहाँ पर किया है ताकि और बेहतर तरीके से समझा जा सके कि पेडागॉजिकल लीडरशिप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में कैसे सहायक है? क्योंकि एक शोधकर्ता के रूप में अपनी बात प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक है कि आप अपने विषय से संबंधित शोधों के निष्कर्षों का प्रयोग अपने कथनों की प्रमाणिकता के लिए अवश्य करें।

ट्रेवर माले और इओआना पलाइओलोगौ (2017) ने प्राथमिक शिक्षा प्रणाली के बारे में समझाया

कि हम स्कूलों में विभिन्न प्रकार के लीडरशिप के बारे में बात करते हैं, जैसे— परिवर्तनकारी लीडरशिप, संस्थागत लीडरशिप, निर्देशात्मक लीडरशिप आदि। लेकिन पेडागॉजिकल लीडरशिप अन्य प्रकार के लीडरशिप से कुछ अलग है जो सक्रिय कक्षा में होने वाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से बहुत करीब है। पेडागॉजिकल लीडरशिप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को लीड करती है और उसका मार्गदर्शन करती है। यह परिवर्तनकारी और निर्देशात्मक लीडरशिप दोनों से जुड़ी हुई है, इसलिए ये गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में सहायक है (एलिना फोंसेन और तुलिक्की उकोनेन-मिक्कोला, 2019)।

शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया से संबंधित किसी भी घटना या कार्य में पेडागॉजिकल लीडरशिप द्वारा क्यों? कैसे? और कब? जैसे प्रश्नों को समझने का प्रयास किया जाता है। जब कि प्राथमिक स्तर पर प्रयोग होने वाली अन्य लीडरशिप में विद्यार्थियों और शिक्षकों का पूरा ध्यान इस बात पर होता है कि कार्य को कैसे पूरा किया जाए? यह स्कूलों के भीतर शिक्षक प्रभावशीलता की कमी को पाटने के लिए एक बहुत प्रभावी लीडरशिप शैली है (एलेट, 2003)। यह चर्चा और संवाद पर आधारित है, एकालाप पर नहीं और विद्यार्थी चर्चा में आवश्यक रूप से भागीदार होते हैं (एलेट और टेडली, 2003)।

एबेल. बी. माइकल (2016) ने अपने शोधकार्य में समझाया है कि पेडागॉजिकल लीडरशिप निर्देशात्मक लीडरशिप का एक हिस्सा है। मूल रूप से, पेडागॉजिकल लीडरशिप शिक्षण और सीखने का समर्थन करने के बारे में है। पेडागॉजिकल लीडरशिप एक व्यापक शब्द है जिसमें सीखने पर ध्यान केंद्रित करने वाले संगठन में कई भूमिकाएँ और कार्य शामिल होते हैं।

पेडागॉजिकल लीडरशिप कई तरीकों से शिक्षण और सीखने में सुधार करती है। उदाहरण के लिए, यह निरंतर गुणवत्ता सुधार के संगठनात्मक मानदंडों को स्थापित करके शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करती है और पेडागॉजिकल लीडर्स पारिवारिक जुड़ाव को बढ़ावा देकर, संस्थान की संगठनात्मक एकता को सुनिश्चित करके बच्चों के सीखने को सकारात्मक तरीके से प्रभावित करते हैं। सीखने के कार्यक्रमों की प्रभावशीलता की जाँच करने के लिए विभिन्न प्रकार के डेटा का उपयोग करते हुए, सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के लिए मानकों को पूरा करने का प्रयास करते हैं (माइकल, 2020)।

अतः ऊपर प्रस्तुत किए गए शोधों के परिणामों के आधार पर हम कह सकते हैं कि पेडागॉजिकल लीडरशिप प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने में बहुत सहायक होती है।

कैसा हो प्रशिक्षण और क्या करें शिक्षक?

हम जानते हैं कि प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में पेडागॉजी का योगदान काफ़ी अहम है। ऐसे में शिक्षक, प्रशिक्षण संस्थानों और इन संस्थानों की गुणवत्ता की निगरानी करने वाली संस्थाओं की ज़िम्मेदारी काफी बढ़ जाती है। हमें चाहिए कि हम ऐसे प्रशिक्षित शिक्षक विकसित करें जिन्हें पेडागॉजी की अच्छी जानकारी हो साथ-ही-साथ पेडागॉजी में कैसे सुधार (इम्प्रूवमेंट) किया जाए? इसकी समझ भी उन्हें होनी चाहिए ताकि वे स्वयं को पेडागॉजिकल लीडर

के रूप में विकसित करने में सक्षम हो सकें। शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यक्रमों में लीडरशिप की ज़रूरतों का खासा ख्याल रखा जाना चाहिए, इसके लिए प्रशिक्षण कार्यकर्मों में शिक्षकों द्वारा विविध व्यवहार सीखने, आपसी संबंधों को मज़बूत करने, शिक्षण में सांस्कृतिक संबंधों को जगह देने, सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देने इत्यादि, जैसे कौशलों का प्रशिक्षण देने और इनका अभ्यास करने पर ज़ोर देना चाहिए, ताकि पेडागॉजिकल लीडर के रूप में शिक्षक कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँच सकें।

स्वयं को पेडागॉजिकल लीडर के रूप में विकसित करने के लिए एक शिक्षक को विषय के ज्ञान पर ज़ोर देने के साथ-साथ अपने भीतर विविध व्यवहारों को विकसित करना होता है। इन सभी व्यवहारों को एक सूत्र में पिरोना आसान नहीं है किंतु पेडागॉजिकल लीडरशिप पर हुए शोधों का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्ता ने कुछ प्रमुख व्यवहारों के पैटर्न को चिह्नित किया है जो स्वयं को पेडागॉजिकल लीडर के रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक है, जो निम्लिखित हैं—

- सकारात्मक संबंध बनाना
- अभिनवीकरण (शिक्षण कार्य में सदैव कुछ नवीन करने का प्रयास करते रहना)
- स्व-प्रतिबिंबन (सेल्फ़-रिफ़्लेक्शन)
- लक्ष्य बनाकर कार्य करना
- अनुशासन (व्यवहारों के क्रमबद्ध निश्चित पैटर्न का अनुपालन करना)

एक पेडागॉजिकल लीडर में कई सारे गुणों का समावेश होता है किंतु ऊपर बताए गए गुण स्वयं को पेडागॉजिकल लीडर के रूप में विकसित करने के लिए एक प्रारंभिक कसौटी की तरह कार्य करते हैं। इनका अनुपालन किए बिना इस पथ पर आगे बढ़ना बेहद कठिन है। एक शिक्षक को ये गुण अपने भीतर विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। ये गुण क्यों महत्वपूर्ण हैं? इसे बिंदुवार नीचे बताया गया है—

चित्र 2— पेडागॉजिकल लीडर के प्रमुख गुण

सकारात्मक संबंध बनाना

एक शिक्षक के रूप में पेडागॉजिकल लीडर बनने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक विविध व्यवहार सीखें और जिसके माध्यम से वे विद्यार्थियों से सकारात्मक मज़बूत संबंध बनाएँ जिससे किसी कक्षा में अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए बच्चे, शिक्षक के साथ जुड़ाव और लगाव महसूस करें। वे अपनी पसंद या नापसंद खुल कर समूह कार्यों में एवं वार्तालापों में खुल कर साझा कर सकें। पेडागॉजिकल लीडर की सबसे बड़ी खूबी ये होती है कि उसे शैक्षिक परिस्थितियों की अच्छी समझ होती है एवं दूसरे

पेडागॉजिकल लीडर्स के साथ उसका मज़बूत संबंध होता है।

अभिनवीकरण (इनोवेशन)

यहाँ अभिनवीकरण से तात्पर्य है कुछ नया (इनोवेटिव) करने का प्रयास करते रहना। एक पेडागॉजिकल लीडर के रूप में शिक्षक को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, उनकी क्षमताओं, उनकी रुचियों इत्यादि को ध्यान में रखकर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एवं विद्यार्थियों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए उसे अपनी शिक्षण विधियों, प्रविधियों एवं पेडागॉजी में निरंतर बदलाव करते रहना चाहिए। उसे इनोवेटिव पेडागॉजिकल तकनीकों को अपने शिक्षण में शामिल करना चाहिए। उन्हें अपनी सोच को निरंतर अभिनवीकरण (इनोवेशन) की तरफ़ उन्मुख रखना चाहिए एवं इसके लिए आवश्यक शोध, परीक्षण, अवलोकन और समीक्षा करते रहना चाहिए।

स्व-प्रतिबिंबन (सेल्फ़-रिफ़्लेक्शन)

एक शिक्षक के रूप में पेडागॉजिकल लीडर बनने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक स्व-नियमन की प्रक्रिया का आवश्यक रूप से अनुसरण करें ताकि उन्हें खुद की ताकत (स्ट्रेंथ), कमज़ोरी, व्यक्तिगत विशिष्टता का पता चल सके। स्व-नियमन की प्रक्रिया को कभी स्वयं के बारे में अपने साथी शिक्षकों से प्रतिक्रिया (फ़ीडबैक) लेने के रूप में भी करना चाहिए जैसे कि आपके बारे में आपके साथी क्या राय रखते हैं? उनके अनुसार आपके कमज़ोर और मज़बूत पक्ष क्या हैं? किन क्षेत्रों में आप को और ज़्यादा सुधार करने की आवश्यकता है? इस तरह के अभ्यास कई बार आप को आप के विषय में हैरान करने वाली जानकारी उपलब्ध कराते हैं। ये अभ्यास आपको आपका दूसरा पक्ष भी दिखाते हैं इसलिए स्व-नियमन की प्रक्रिया का अभ्यास एक शिक्षक के लिए स्वयं को पेडागॉजिकल लीडर के रूप में विकसित करने के लिए बहुत आवश्यक है।

लक्ष्य बनाना

एक शिक्षक के रूप में पेडागॉजिकल लीडर हमेशा लक्ष्य बनाकर कार्य करता है। शिक्षक के रूप में लक्ष्य बनाने में दो प्रमुख चुनौतियाँ सामने आती हैं, पहली कि जिन विद्यार्थियों के साथ आप कार्य कर रहे हैं आप उनसे क्या चाहते हैं? या उन में क्या बदलाव चाहते हैं? और दूसरा ये कि जो आप चाहते हैं उसे आप कैसे प्राप्त करेंगे? एक शिक्षक के रूप में पेडागॉजिकल लीडर को उसके लक्ष्य, उसके लिए सकारात्मक प्रेरण या स्कैफ़फ़ोल्डिंग के रूप में कार्य करते हैं। शिक्षकों को अपने पेडागॉजिकल कौशल को इस प्रकार से प्रयोग में लाना चाहिए कि वे स्वयं के द्वारा बनाए लक्ष्यों को शीघ्रता से प्राप्त कर सकें।

अनुशासन

किसी भी रास्ते पर चलने और अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अनुशासन एक बहुत ही महत्वपूर्ण अभ्यास है। एक शिक्षक को स्वयं को पेडागॉजिकल लीडर के रूप में विकसित करने के लिए अनुशासन एक पहले से विद्यमान कसौटी है जिसका पालन किए बिना आप लीडर तो बन सकते हैं किंतु पेडागॉजिकल लीडर नहीं।

© NCERT not to be republished

उपर्युक्त पाँच गुणों को स्वयं के भीतर ढाल कर कोई भी शिक्षक स्वयं को पेडागॉजिकल लीडर के रूप में विकसित करने के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है।

सुझाव

पेडागॉजिकल लीडरशिप से संबंधित शोधों का बारीकी से अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्ता की जो समझ बनी है, उसी के आधार पर उसने कुछ सुझाव देने का प्रयास किया है, जो इस प्रकार हैं—

- राज्य सरकारों और केंद्र सरकार द्वारा अधिक से अधिक क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम (कैपिसिटी बिल्डिंग एंड ट्रेनिंग प्रोग्राम) आयोजित किए जाने चाहिए ताकि सेवारत शिक्षकों, प्रमुखों और प्रधानाचार्यों को बड़ी संख्या में प्रशिक्षित किया जा सके और उन्हें भविष्य के पेडागॉजिकल लीडर्स के रूप में तैयार किया जा सके।
- विकसित देशों ने प्राथमिक शिक्षा में लीडरशिप की भूमिका को भारत की तुलना में ज़्यादा बेहतर समझा है इसलिए उन्होंने स्कूल लीडरशिप को मज़बूत करने के लिए कई प्रशिक्षण संस्थान शुरू किए हैं जहाँ शिक्षकों को लीडर्स के रूप में तैयार किया जाता है। हमें नीपा के नेशनल सेंटर फ़ॉर स्कूल लीडरशिप की तर्ज़ पर राज्य और केंद्रीय सरकारों को आपस में समन्वय कर स्कूल लीडरशिप के और संस्थानों को स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि सेवा-पूर्व और सेवारत शिक्षकों के लिए स्कूल लीडरशिप पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम न सिर्फ़ तैयार किए जाएँ बल्कि उनका प्रशिक्षण भी बड़े स्तर पर दिया जाए।
- भारत एक भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से विविधता वाला देश है इसलिए हमें शिक्षकों, प्रमुखों और प्रधानाचार्यों का एक उचित डेटाबेस तैयार करने की आवश्यकता है जो स्कूल लीडरशिप कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित हों और समय-समय पर उनके सुधार के बारे में बैठकें आयोजित की जाएँ।

निष्कर्ष

गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा किसी व्यक्ति के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण की तरह कार्य करती है क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं का विकास करने में सहायता मिलती है और साथ ही साथ राष्ट्र विकास और राष्ट्र निर्माण में भी इसकी अहम भूमिका होती है। भारत में गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा को सर्वसुलभ कराना आज भी एक बड़ा मुद्दा है। *असर 2018* की रिपोर्ट में इस बात को स्पष्टता के साथ रेखांकित किया गया है। प्राथमिक शिक्षा के बदलते परिदृश्य में पेडागॉजिकल लीडरशिप गुणवत्ता सुधार, शिक्षण और सीखने को सकारात्मक रूप से बदलने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में इस बात को स्वीकार किया गया है कि भारत की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में पेडागॉजिकल लीडरशिप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए एक प्रमुख घटक बन सकती है। भारत की स्कूल शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित करने और इसमें पेडागॉजिकल

लीडरशिप के रोल को समझते हुए फ़रवरी 2021 के पहले सप्ताह में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) ने स्कूल हेड्स के लिए एक पेडागॉजिकल लीडरशिप पुस्तिका लॉन्च की थी, जिसका उद्देश्य स्कूलों में पेडागॉजिकल लीडर्स को तैयार करना था जो आनंदमय तरीकों को अपनाकर शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से सुविधाजनक बना सकें। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष में स्कूल हेड्स और शिक्षकों को बड़े स्तर पर प्रशिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा निष्ठा, निष्ठा 1.0, निष्ठा 2.0 एवं निष्ठा 3.0 जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने आप में विश्व के सबसे बड़े टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम के रूप में कार्य कर कर रहे हैं। ये प्रशिक्षण प्रोग्राम स्कूल हेड्स और शिक्षकों को भविष्य में बेहतर शिक्षक और अच्छे लीडर के रूप में विकसित करने के लिए चलाए जा रहे हैं। इसका सीधा फ़ायदा विद्यार्थियों और समाज को मिलेगा क्योंकि प्रशिक्षित स्कूल हेड्स और शिक्षक भारत में गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने में सहायक होंगे।

स्कूल परिसर के अंदर एक पेडागॉजिकल लीडर स्कूल के भीतर अधिगम को मज़बूत करने के लिए काम करता है। वह विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों को शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित करता है और उन्हें अपने विकास के साथ-साथ स्कूल और समाज के विकास के लिए पूरे उत्साह के साथ काम करने के लिए भी प्रेरित करता है। एक पेडागॉजिकल लीडर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहता है, इसलिए हमें पेडागॉजिकल लीडर के रूप में स्वयं को विकसित करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए।

संदर्भ

एटकिंसन, किम और लेक्सी बेगुन. 2017. एन अनसर्टेन टेल : अल्टरनेटिव कांसप्चुलाइजेशन ऑफ़ पेडागॉजिकल लीडरशिप. *जर्नल ऑफ़ चाइल्ड*. http://www.researchgate.net/publication/328579420_An_Uncertain_Tale_Alternative_Conceptualizations-of-Pedagogical-Leadership.pdf

एबेल. बी. माइकल. 2016. व्हाई पेडागॉजिकल लीडरशिप? https://mccormickcenter.nl.edu/library/why-pedagogical-leadership/#:~:text=Pedagogical%20leadership%20is%20about%20supporting,and%20functions%20in%20learning%20organizations

एलेट, सी.डी. और सी. टेडली. 2003. टीचर इवैल्यूएशन, टीचर इफ़ेक्टिवनेस एंड स्कूल इफ़ेक्टिवनेस : पर्सपेक्टिव्स फ्रॉम द यू.एस.ए. *जर्नल ऑफ़ पेर्सोनेल इवैल्यूएशन इन एजुकेशन रिसर्च*. 17(1). पृ. सं. 101–128.

हिक्का, जोहाना. एच. पिटकानिमी; टी. केटुकांगस और टी. हाइटिनन. 2019. डिस्ट्रिब्यूटेड पेडागॉजिकल लीडरशिप एंड टीचर लीडरशिप इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन कॉन्टेक्स्ट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ लीडरशिप इन एजुकेशन*. http://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/13603124.2019.1623923

ट्रेवर माले और इओआना पलाइओलोगौ 2017. पेडागॉजिकल लीडरशिप इन एक्शन : टू केस स्टडीज इन इंग्लिश स्कूल. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ लीडरशिप इन एजुकेशन*. 20:6. पृ. सं. 733–748. http://DIO:10.1080/13603124.2016.1174310

नीपा. 2014. *राष्ट्रीय कार्यक्रम डिज़ाइन और पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क*. नेशनल सेंटर फ़ॉर स्कूल लीडरशिप. 10 दिसंबर, 2021 को http://ncsl.niepa.ac.in/Materials/English_National_PDCFSLD.pdf से प्राप्त।

प्रथम. 2018. *असर रिपोर्ट 2018*. 2 दिसंबर, 2021 को https://www.asercentre.org/Keywords/p/346.html से पुनः प्राप्त।

पोंडी, एल.आर. 1978. लीडरशिप इज अ लैंग्वेज गेम. एम.डब्लू. मैककाल और एम.एम. लोम्बारडों, लीडरशिप : व्हेर एल्स कैन वी गो? पृ. सं. 87–99. डरहम, एन.सी. : ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस.

फोंसेन, एलिना और उल्ला सौकेनन. 2020. सस्टेनेबल पेडागॉजिकल लीडरशिप इन फ़िनिश अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन (ई.सी.ई.) : एन इवैल्यूएशन बाई ई.सी.ई. प्रोफ़ेशनल्स. http://dx.doi.org/10.1007/s10643-019-00984-y

—— और तुलिक्की उकोनेन-मिक्कोला. 2019. अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन टीचर्स प्रोफ़ेशनल डेवलपमेंट टुवर्ड्स पेडागॉजिकल लीडरशिप. *एजुकेशनल रिसर्च*. 61:2. पृ. सं. 181–196. http://www.researchgate.net./publication/332435100_Early_childhood_education_teachers%27_professional_development_towards_pedagogical_leadership

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली. 11 जनवरी, 2022 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/NPE86-mod92.pdf से प्राप्त।

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली. 22 दिसंबर, 2021 को https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf से पुनः प्राप्त।

———. 2017. *नेशनल अचिवमेंट सर्वे 2017*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली. 22 दिसंबर, 2021 को https://ncert.nic.in/NAS.php को पुनः प्राप्त।

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा. 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली. 11 जनवरी, 2022 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf से प्राप्त।

लुबना अलमीन, ट्रेवर मेल और इओना पलाइओलोगौ. 2015. एक्सप्लोरिंग पेडागॉजिकल लीडरशिप इन अर्ली इयर्स एजुकेशन इन सऊदी अरेबिया. *स्कूल लीडरशिप एंड मैनेजमेंट*. http://www.researchgate.net/publication/272684724_Exploring_Pedagogical_Leadership_in_Early_Years_Education_in_Saudi_Arabia

© NCERT not to be republished

वेब, आर. 2005. लीडिंग टीचिंग एंड लर्निंग इन दि प्राइमरी स्कूल : फ़ॉर्म एजुकेटिव लीडरशिप टू पेडागॉजिकल लीडरशिप. *एजुकेशनल मैनेजमेंट एडमिनिस्ट्रेशन एंड लीडरशिप*. 33(1). पृ. सं. 69–91. https://doi.org/10.1177/1741143205048175

शिक्षा का अधिकार अधिनियम. 2009. *निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली.

संयुक्त राष्ट्र संघ. 2015. *सतत विकास लक्ष्य 2015*. संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय, न्यूयार्क. 25 दिसंबर, 2021 को https://sdgs.un.org/goals से प्राप्त।

सिंह, वी. 2016. *गुणवत्तापूर्ण शिक्षा क्या है*? 10 जनवरी, 2022 को https://educationmirror.org/2016/03/25/what-is-quality-education-in-indian-context/ से प्राप्त।

सी.बी.एस.ई. 2021. *पेडागॉजिकल लीडरशिप पुस्तिका 2021*. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. 8 जनवरी, 2022 को http://cbseacademic.nic.in/web_material/Manuals/Principals_Handbook.pdf से पुनः प्राप्त।

© NCERT not to be republished